स्वदेशी आन्दोलन :-

आर्थिक पृष्ठभूमि →

बंगाल तथा भारत के अन्य क्षेत्रों में लोग निरन्तर होने वाले अकाल एवं प्लेग से पीड़ित थे

(2) बंगाल में जनसंख्या वृद्धि हो रही थी, इसलिये अतिरिक्त भूमि की माँग बढ़ रही थी। इस माँग को पूरा करने के लिये नए क्षेत्र में खेती का प्रसार हो रहा था। चूँकि उपजाऊ भूमि अब उपलब्ध नहीं थी इसलिए सीमांत उपजाऊ क्षेत्र में खेती का विस्तार करना लोगों की मजबूरी थी। जाहिर है कि इस क्षेत्र में उत्पादन कम था किन्तु जमींदारों के द्वारा आरोपित भू राजस्व की रकम में कोई रियायत नहीं थी। अतः असन्तोष स्वाभाविक था।

(3) कृषि भूमि के विस्तार के कारण चारागाह तथा जंगल वाले क्षेत्र सिमट गए। इसके कारण भी लोगों को असुविधा हो रही थी।

(4) ब्रिटिश के द्वारा आरोपित मुक्त व्यापार की नीति के कारण बंगाल में व्यापारी एवं पूँजीपति पीड़ित थे।

(5) सरकारी सेवा में रोजगार के अवसर सीमित थे, दूसरी तरफ औद्योगिक रूप का विकास न होने के कारण अतिरिक्त जनसंख्या को रोजगार मिलना कठिन था। अतः बढ़ती बेरोजगारी ने भी युवकों में असन्तोष उत्पन्न किया

(6) मूल्यवृद्धि के कारण भी लोगों में असन्तोष उत्पन्न हो रहा था।

राजनीतिक पृष्ठभूमि → आर्थिक कारकों ने मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग दोनों को प्रभावित किया था, किन्तु राजनीतिक कारक केवल मध्यवर्ग से ही संबद्ध था। मध्यवर्ग के लिये यह एक भावनात्मक मसला था -

(1) 20 वीं सदी के आरंभ में बंगाल में तिलक एवं जुझारू राष्ट्रवाद का प्रभाव बढ़ रहा था।

(2) स्वामी विवेकानन्द भी एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में स्थापित हुए। शिकागो विश्वधर्म सम्मेलन में उन्होंने भारतीयता की जो श्रेष्ठता स्थापित की, इसने युवकों के स्वाभिमान को जगाया।

(3) कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियों के विरुद्ध भारतीय बुद्धिजीवी संगठित होने लगे थे। उसके द्वारा लागू किया गया Calcutta Corporation act और Calcutta University act ने बंगाल के बुद्धिजीवियों के आत्मसम्मान को धक्का पहुँचाया

(4) तात्कालिक कारण :- स्वदेशी आन्दोलन का तात्कालिक कारण बना - बंगाल का विभाजन। यद्यपि विभाजन का घोषित उद्देश्य था प्रशासनिक पुनर्व्यवस्थापन। किन्तु इसका वास्तविक उद्देश्य राष्ट्रीय आन्दोलन को कमजोर करना था।

Scanned with CamScanner